B.Ed. 1st Year
Session – 2019-2020/2021
Subject – Pedagogy of Social Science
Course – 7 (A) /Unit – 2(d)
Topic – पाठ्यचर्या निर्माण के प्रमुख आधार
(Foundations of Curriculum)
Lecture No. - 39

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

पाठ्यक्रम निर्माण के चार प्रमुख आधार है –

1. **दार्शनिक आधार (Philosophical Base)**

   i. **आदर्शवाद (Idelalism)** – यह विचारधारा शाश्वत मूल्यों एवं आदर्शों पर बल देती है। **प्रो. हॉर्न**, जो कि एक आदर्शवादी हैं, के अनुसार पाठ्यक्रम में कुछ कला, कुछ विज्ञान, एवं कुछ व्यवसाय को स्थान मिलना चाहिए। **रॉस** महोदय के अनुसार, पाठ्यक्रम का आधार ज्ञानात्मक, भावात्मक, एवं क्रियात्मक प्रक्रियाओं का विकास होना चाहिए। इस विचारधारा के अनुसार पाठ्यचर्या में भाषा, साहित्य, सामाजिक विज्ञान, गणित, विज्ञान, संगीत, कला, पाकशास्त्र, कताई–बुनाई आदि विषय रखे जाने चाहिए।

   ii. **प्रकृतिवाद (Naturalism)** – यह विचारधारा बालक के व्यक्तित्व के विकास पर बल देता है। इसके अनुसार बालक के व्यक्तित्व के स्वतंत्र विकास को शिक्षा का ध्येय माना गया है। अतः यह विचारधारा बालक को आत्मप्रकाशन के लिए अनियंत्रित स्वतंत्रता देने का पक्षपाती है। प्रकृतिवादी पाठ्यचर्या में उन क्रियाओं का समावेश चाहते हैं, जिनसे छात्रों की स्वभाविक प्रवृत्तियों का विकास संभव हो। इस विचारधारा के अनुसार पाठ्यक्रम में खेलकूद, व्यायाम, तैराकी, भूगोल, पाकृतिक विज्ञान आदि विषयों को स्थान मिलना चाहिए।

   iii. **व्यवहारवाद या प्रयोजनवाद (Pragmatism)** – यह विचारधारा उपयोगिता के सिद्धांत पर बल देता है। साथ ही यह विचारधारा सामूहिक क्रियाओं पर भी बल देता है, जिससे छात्रों में सामाजिकता की भावना का विकास हो सके। **जॉन ड्यूवी** ने बालक की रूचियों को चार भागों में इस प्रकार वर्गीकृत किया है –

      (a) बातचीत तथा विचारों के आदान–प्रदान की अभिरूचि
      (b) कौतुहल या जिज्ञासा की अभिरूचि
      (c) रचनात्मक अभिरूचि
      (d) कलात्मक अभिरूचि

ड्यूवी महोदय ने इन रूचियों को प्रारंभिक कक्षाओं के पाठ्यक्रम का आधार बनाया है। इस विचारधारा के अनुसार पाठ्यक्रम में कला, भाषा, कताई–बुनाई, दुकानदारी, बागवानी, गणना, काष्ठ कला आदि को स्थान मिलना चाहिए।

iv. **यथार्थवाद (Realism)** – यह विचारधारा जीवन की वास्तविकता पर बल देता है। यह उन क्रियाओं को स्थान देता है जिनके द्वारा वास्तविक जीवन की परिस्थितियों का ज्ञान प्राप्त हो सके। इस प्रकार यह पाठ्यक्रम को एक मजबूत आधार प्रदान करता है।

2. **सामाजिक आधार** (Sociologicla Base) – इस आधार के अनुसार पाठ्यक्रम में उन विषयों को स्थान मिलना चाहिए जिनके अध्ययन के फलस्वरूप छात्रों में सामाजिकता की भावना का विकास हो। विद्यालय का संपूर्ण वातावरम किसी बृहत समाज का लघु रूप होता है। इस आधार के अनुसार शिक्षा के लक्ष्य समाज की संस्कृति, अनुभवों आदि को भावी पीढ़ी को प्रदान करना तथा समाज की उन्नति एवं प्रगति। इसके लिए पाठ्यक्रम में भाषा, इतिहास, साहित्य, समाजशास्त्र, भूगोल, नीतिशास्त्र आदि को स्थान मिलना चाहिए।

3. **मनवैज्ञानिक आधार** (Psychological Base) – इस आधार के अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण बालक की रूचियों, स्वभाविक प्रवृत्तियों, आवश्यकताओं एवं शक्तियों के अनुसार होना चाहिए। यह विचारधारा बालक को केन्द्र में रखकर पाठ्यक्रम का निर्धारण करता है।

4. **वैज्ञानिक आधार** (Scientific Base) – इस आधार के अनुसार शिक्षा का मुख्य ध्येय पूर्ण जीवन के लिए तैयारी है। **हरबर्ट स्पेन्सर** इस विचारधारा के प्रमुख हिमायती हैं। इनहोंने पाँच प्रकार के कार्यों को करने का सुझाव दिया है –

   i. आत्मरक्षा में प्रत्यक्ष रूप से सहायक क्रियाएँ,
   ii. आत्मरक्षा में परोक्ष रूप से सहायक क्रियाएँ,
   iii. वंशवृद्धि व शिशुपालन से संबंधित क्रियाएँ,
   iv. सामाजिक व राजनैतिक क्रियाएँ,
   v. अवकाश के समय की क्रियाएँ

स्पेन्सर महोदय ने इन क्रयाओं की प्राप्ति के लिए पाठ्यचर्या में निम्नलिखित विषयों के समावेश पर बल दिया है –

(a) फिजियोलॉजी तथा स्वास्थ्य विज्ञान
(b) भाषा, गणित, भूगोल आदि
(c) गृहशास्त्र, शरीर विज्ञान, बाल मनोविज्ञान
(d) समाजशास्त्र, राजनीति, इतिहास तथा अर्थशास्त्र
(e)साहित्य, कला, संगीत आदि।

(समाप्त)